KAAV INTERNATIONAL JOURNAL OF ECONOMICS, COMMERCE & BUSINESS MANAGEMENT
A REFEREED BLIND PEER REVIEW QUARTERLY JOURNAL
KIJECBM/ JAN-MAR (2018)/VOL-5/ISS-1/A2 PAGE NO.5-7
ISSN: 2348-4969 IMPACT FACTOR (2017) – 7.8902
UGC APPROVED JOURNAL NO. 47663
WWW.KAAVPUBLICATIONS.ORG

18वीं शताब्दी में बीकानेर राज्य के बीदावत राठौड़ों के साथ सम्बन्ध

[1]सुरेन्द्र सिंह
[1]शोधार्थी, इतिहास विभाग
महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक

सारांश
बीदावाटी के प्रारम्भिक शासक केवल ठिकानेदार के रूप में नहीं अपितु कुलीय सम्बन्ध के आधार बीकानेर के सहयोगी शासक के रूप में कार्य करते थे। आरम्भ में बीकानेर राजय तथा बीदावटी राज्य एक समान शक्तिशाली थे। बीदावत सरदार बीकानेर रियासत को आवयकता पड़ने पर जो सैनिक सहायता देते थे वह सेना के रूप में नहीं अपितु नैतिक व सामाजिक दायित्व के रूप में देते थे। बीकानेर के शासक राव बीका के उत्तराधिकारी समय–समय पर अपनी शक्ति के विकास का प्रयास करने लगे तथा बीदावाटी की स्वतन्त्र शक्ति को नियन्त्रित करने के उपाय ढूंढने लगे। इस हेतु अनेक अवसरों पर बीदावतों व बीकानेर राज्य के संबंधों में तनाव उत्पन्न हुए। इसकी कीमत बीकानेर शासक राव लूणकरण व जैतसी को अपने प्राण देकर चुकानी पड़ी, परन्तु समय के साथ–साथ बीदावत ठिकानों के प्रशासन में बीकानेर राज्य का हस्तक्षेप बढ़ने लगा। बीदावाटी के ठिकानेदार शासक के रूप में किसानों से लगान व जनता से कर आदि वसूल करते थे। वे अपने–अपने ठिकानों में खुद मुखत्यार होते थे। प्रजा के प्रति उनका मुख्य कर्तव्य चोर डाकूओं आदि से रक्षा करना तथा व्यवस्था बनाए रखना होता था। बीकानेर के शासक कल्याणमल के पश्चात् बीदावाटी के प्रशासन में महत्वपूर्ण परिवर्तन आए। इसके बाद इनके संबंधों में ठहराव आना शुरू हो गया। इन्हीं बनते–बिगड़ते संबंधों को इस शोध–पत्र में दिखाने का प्रयास करेंगे।

मुख्य शब्द : *ठिकानेदार, व्यवस्था, बीदावाटी, संबंध, अवसर, परिवर्तन*

प्रस्तावना

बीदावत राठौड़ों का बीकानेर के साथ राज्य की स्थापना से ही महत्वपूर्ण सम्बन्ध रहा है। राव बीदा एवं बीकानेर राज्य की स्थापना में परस्पर सहयोग प्रदान किया।[i] राव बीका के समय बीदावतों का बीकानेर रियासत के समय भाईचारे का सम्बन्ध रहा। बीकानेर व द्रौणपुर (बीदावाटी) दोनों स्वतन्त्र राज्य थे तथा समय–समय पर एक दूसरे की सहायता को तत्वर रहे थे।[ii] कर्नल टॉड के अनुसार बीकानेर महाराज राव जैतसी ने सर्वप्रथम बीदावत राठौड़ों पर वार्षिक भेंट तथा कुछ कर आदि लागू करके उनसे अपनी प्रभुसत्ता को स्वीकार कराया।[iii] इस सम्बन्ध में बीदावतों की ख्यात में ठाकुर बहादुर सिंह ने लिखा है कि सर्वप्रथम केवल द्रोणपुर के बीदावत ठिकानेदार पर ही कर लगाया।[iv] परन्तु इन सभी स्त्रोतों से यह स्पष्ट है कि राव जैतसी के समय से ही बीदावतों का बीकानेर राज्य से कटुतापूर्ण सम्बन्ध स्थापित होना आरम्भ हो गया और बीदावतों की क्षेत्रीय स्वायत्ता खतरे में पड़ने लगी। मुग़ल बादशाह अकबर के शासनकाल में मुग़ल राजपूत सम्बन्ध सुदृढ़ हुए परिणाम स्वरूप बीकानेर महाराज रायसिंह को अकबर ने मनसब प्रदान किये।[v] अकबर की इस मनसबदारी प्रथा के पश्चात बीकानेर शासकों की वीदावत सरदारों पर निर्भरता कम होने लगी अब उन्हें मुग़लों से सुरक्षा की गारन्टी प्राप्त हो गई। अतः बीदावाटी की स्वतन्त्रता सत्ता पर बीकानेर के नियन्त्रण बढ गए। सन् 1599 ई. में अकबर ने बीदावाटी का परगना भी बीकानेर रियासत में मिला दिया।[vi] इस प्रकार बीदावाटी की स्वतन्त्रा का अन्त हो गया तथा यह क्षेत्र विभिन्न ठिकानों के रूप में बीकानेर रियासत का अंग बन गया।[vii] 1696 ई. महाराजा अनूपसिंह के समय में बीकानेर राज्य में सामन्तों का पट्टा लिख कर देने की प्रथा आरम्भ हो गई। इस प्रथा का आरम्भ तब हुआ जब बीदावत सरदार लाखण सिंह संगरोट के पुत्र देवीदास ने बीकानेर महाराजा को रकम भेंट कर पट्टा लिखवाया। पहले केवल पट्टा बही में ही इन्द्राज किया जाता था, परन्तु बाद में सभी बीदावत ठिकानेदारों ने पट्टा लिखवाना

Copyright © 2017 Published by kaav publications. All rights reserved www.kaavpublications.org

आरम्भ कर दिया। इसके परिणाम स्वरूप वीदावत ठीकानेदारों से हुक्मनामा (कर) वसूली आरम्भ हो गई।[viii] बीदावत ठिकानेदारों पर बीकानेर रियासत के बढ़ते नियन्त्रण के बाद भी बीदावत सरदारों ने सदा स्वामिभक्ति का परिचय देकर बीकानेर के सम्मान की रक्षा की। बीकानेर महाराजा सुजानसिंह जब मुग़ल बादशाह औरंगजेब की सेवा में दक्षिण भारत के अभियानों में गये हुए थे।[ix] तब मौके का लाभ उठाकर जोधपुर महाराजा अजीत सिंह ने सन् 1707 ई. में बीकानेर राज्य पर आक्रमण हेतु बीदावटी के लाडनू क्षेत्र में आकर घेरा डाला वहाँ उन्होंने गोपालपुरा के ठाकुर कर्मसेन बीदावत तथा ठिकाणुता के ठाकुर बिहारीदास बीदावत को बुलाकर बीकानेर राज्य के विरुद्ध जोधपुर की सहायता करने का प्रयास किया, परन्तु दोनों स्वामीभक्त बीदावत ठिकानेदारों ने अजीत सिंह के प्रस्ताव को ठुकरा दिया। इस पर नाराज होकर अजीत सिंह ने दोनों बीदावत ठाकुरों को नज़रबन्द कर दिया। फिर इन दोनों ठाकुरों ने बीकानेर पर चढ़ाई का गुप्त समाचार बीकानेर महाराज तक पहुँचाया।[x] जब जोधपुर की सेना ने बीकानेर पर हमला कर दिया तब बीदावत सरदार हिन्दू सिंह मलसीसर तथा ठाकुर, पृथ्वीसिंह ने बीकानेर किले की रक्षा कर जोधपुर की सेना का वीरतापूर्वक सामना किया। अन्त में काम बनता न देखकर जोधपुर की सेना लौट गई। लोटकर जाते हुए उन्होंने कर्मसेन व बिहारीदास बीदावत को मुक्त कर दियज्ञं इसके बाद भी बीकानेर पर जोधपुर के अनेक आक्रमण हुए। जिसके दौरान बीकानेर रियासत के चूरू, भादरा, महाजन आदि प्रमुख किठानों के ठाकुर विद्रोही हो गये। बीकानेर की इस नाजुक दशा में भी बीदावत ठिकानेदारों ने राज्य का पूर्ण साथ दिया। इन सरदारों की मुख्यधारा बीकानेर राज्य के हित में सक्रिय थी। सन् 1733 ई. में जोधपुर महाराजा अभयसिंह व उनके भाई बख्तसिंह ने बीकानेर पर चढ़ाई की, तब सांडवा के बीदावत ठाकुर दानसिंह एवं बीदासर ठाकुर जालमसिंह ने जोधपुर की सेना के विरुद्ध बीकानेर का साथ दिया। सन् 1739 ई. में जोधपुर राज्य द्वारा बीकानेर किले की घेराबन्दी के समय बीदासर व हरासर के बीदावत सरदारों व सैनिकों ने प्राण से बीकानेर राज्य की सैनिक सेवा की। इसके बाद भी बीदावतों ने अनेक युद्धों में लड़कर अपनी स्वामीभक्ती का परिचय दिया। बीकानेर में आन्तरिक विद्रोह बाहरी आक्रमणों के इस संक्रमण काल में बीकानेर राज्य में बीदावत सरदारों का प्रभुत्व बढ़ गया।[xi] सन् 1746 ई. जब महाराजा गजसिंह बीकानेर के शासन बने जब बीकानेर रियासत के अधिकांश जागीरदार (बीदावतों को छोड़कर) विद्रोही बने हुए थे तथा जोधपुर के राठौड़ निरन्तर बीकानेर पर आक्रमण कर रहे थे। ऐसे समय पर बीकानेर रियासत में बीदावत सामन्तों की सहयोगपूर्ण प्रवृत्ति को देखकर महाराजा गजसिंह ने बीदावत सरदारों को सर्वाधिक पट्टे दिए।[xii] इससे बीकानेर राज्य की स्थिति निरन्तर सुदृढ़ होती गई तथा बीदावत बीकानेर की राज व्यवस्था पर छा गये। बीदावत सरदारों ने भी बीकानेर के महाराजा गजसिंह के विभिन्न अभियानों में 1749 ई. पीपाड़ युद्ध, 1750 ई. के मेडता युद्ध, बख्तसिंह को जोधपुर का शासक बनाने[xiii] में व सिन्धियाँ आक्रमण के समय[xiv] सहयोग देकर बीकानेर रियासत के साथ अपने सम्बन्ध सुदृढ़ किये। बीकानेर रियासत में बीदावत सरदार अत्यधिक शक्तिशाली होते जा रहे थे। राज्य में बीदावत सामन्तों की बढ़ती शक्ति पर नियन्त्रण के लिए बीकानेर महाराज गजसिंह ने बीदावतों पर भाछ (कर लगाने की प्रथा आरम्भ की[xv] जिसका अनुसरण बाद में सूरतसिंह व अन्य महाराजाओं ने किया। भाछ के माध्यम से बीकानेर राज्य को अकाल व अन्य आर्थिक विपदाओं से बचना अपेक्षित था। बीदावतों पर लगाये जाने वाले भाछ से बीदावत सरदारों के बीकानेर राज्य से सम्बन्धों में परिवर्तन आया।

सन् 1754 ई. में बीकानेर महाराजा गजसिंह बीदासर गये। वहाँ पहुंचकर उन्होंने बीदावतों पर भाछ (कर) के छः हजार रूपय लगाने के लिए बीदावत सरदारों से विचार विमर्श किया तथा बीदासर में तांबे की खाने देखी और सभी बीदावत सरदारों की तरफ से बीदासर ठाकुर जालमसिंह ने महाराजा को दो घोड़े भेंट किये। अन्त में बीदावतों पर भाछ के छः हजार रूपये वार्षिक कर के रूप में लागू कर दिये।[xvi] इससे बीदावत सरदारों पर बीकानेर के शासकों का नियन्त्रण बढ़ गया। परिणामस्वरूप दोनों के मध्य सम्बन्धों में दूरियाँ बढ़ने लगी। इसके बाद भी जब 1763 ई. दाउद पुत्रों एवं इख्तियार खां ने बीकानेर पर आक्रमण किया तो कुछ बीकानेर सरदारों को छोड़कर बीदावतों ने बीकानेर का साथ दिया और बीकानेर राज्य की ओर से लड़ते हुए मारे गये।[xvii] सन् 1772 ई. में जब रावतसर के ठिकानेदार अमर सिंह ने बीकानेर राज्य के विरुद्ध विद्रोह कर दिया तब बीदावतों ने बीकानेर राज्य का सहयोग किया। हरासर के ठाकुर देवीसिंह तथा अन्य बीदावत सरदारों ने महाराजा गज सिंह की तरफ से जाकर विद्रोह को दबाया। इसके अतिरिक्त बारू तथा टेकरे के ठिकानेदारों द्वारा बीकानेर के विरुद्ध विद्रोह के समय भी बख्तावर सिंह के साथ बीदावतों की सेना भेजकर ठेकरे के गढ़ पर अधिकार किया तथा लुटेरे विद्रोहियों को मार डाला गया।[xviii] सन् 1773 ई. में भट्टी मुसलमानों के बीकानेर राज्य के विरुद्ध विद्रोह किया। ऐसी परिस्थिति में बीदासर के कुँवर उमेद सिंह एवं कुँवर अजीतसिंह ने भट्टी सेना के विरुद्ध बीकानेर राज्य को सफलता दिलवाई। इसके परिणामस्वरूप बीकानेर महाराजा ने कुँवर उमेदसिंह एवं कुँवर अजीत सिंह को बुलाकर सम्मानित किया।[xix] सन् 1787 ई. महाराजा सूरतसिंह बीकानेर का शासक बना। बीकानेर शासक गजसिंह के समय से ही बीदावतों पर जो नियन्त्रण के प्रयास आरम्भ किये गये थे, वे सूरतसिंह के शासनकाल में और अधिक बढ़ गये। यद्यपि सूरतसिंह का राज्यरोहण बीदावतों सरदारों के सहयोग से ही हुआ था। सन 1787 ई. में महाराज गजसिंह की शोक अवधि में बीदावतों सहित बीकानेर के सभी सरदार गढ़ में ठहरे हुए थे। तब किसी को भी यह आभास नहीं था कि गजसिंह के पश्चात् उका उत्तराधिकारी कौन होगा। जिसे समय में बीदावतों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। बीदावतों की ख्यात के अनुसार गजसिंह की शोक अवधि में जब एक दिन बीकानेर में ठरहे हुए बीदासर के कुँवर उमेद सिंह ने पूजा के लिए धूप लगाने का संकेत दिया, जिसे वह नहीं समझा। इस पर कुमार सूरत सिंह तुरन्त धूप ले आये तो उमेद सिंह ने उसे स्वामी सम्बोधन करके ऐसा करना अनुचित बताया। सूरतसिंह ने कहा कि 'आप बड़े हो मैं बालक हूँ, महाराज गजसिंह के अनेक पुत्र हैं, न जाने कौन राजा हो, अतः धूप लाने में क्या हर्ज है?' इस पर उमेदसिंह ने सूरत सिंह को बीकानेर का शासक बनाने की ठान ली।[xx] इस हेतु वे

Copyright © 2017 Published by kaav publications. All rights reserved www.kaavpublications.org

सहायता मांगने के लिए भादरा के ठाकुर के पास गये पर, उन्हें विशेष सहयोग नहीं मिला, परन्तु बीदावर सहित समस्त बीदावता ठिकानेदारों के सहयोग से 21 अक्टूबर, 1787 ई. को सूरत सिंह का बीकानेर में राजतिलक किया गया। सन् 1800 ई. में बीदासर के ठाकुर जालम सिंह के नेतृत्व में बीकानेर की सेना ने भावलपुर का घेरा डाला तथा 23 नवम्बर 1802 ई. को बीदावटी के मैणसर गाँव के तेज सिंह को बीदावत रायसिंह ने महाराजा सूरतसिंह की आज्ञा पर बीकानेर की सेना के सहयोग से खानगढ़ पर चढ़ाई की। उस समय खानगढ़ अत्यधिक धन–सम्पदा से भरपूर था। अतः बीदावतों के सहयोग से बीकानेर की सेना ने खान पर अधिकार कर लिया।[xxi]

निष्कर्ष

इस प्रकार बीकानेर के बीदावतों से सम्बन्ध मित्रतापूर्ण रहे। छिट–पुट घटनाओं को छोड़कर इनके सम्बन्ध मधुर रहे। आवश्यकता अनुसार बीकानेर शासकों ने बीदावटों की सहायता की तो जरूरत पड़ने पर बीदावट भी बीकानेर का सहयोग करने में पीछे नहीं रहे।

संदर्भ सूची

- पाउलेट गजेटियर ऑफ दी बीकानेर स्टेट, पृ. 3
- वीर विनोद, भाग 2, पृ. 481, पाउलेट, पृ. 10
- टॉड कृत, बीकानेर राज्य का इतिहास, पृ. 14
- ओझा, बीकानेर राज्य का इतिहास, पृ. 108–109
- वही, पृ. 137
- पाउलेट, पृ. 30–31
- बीकानेर राज्य की पट्टा बही संवत 1753 (1696 ई.), रा.रा.अ. बीकानेर
- वही
- बीकानेर री ख्यात, पृ. 26, ओझा, बीकानेर राज्य का इतिहास, पृ. 223
- वही, पृ. 27
- घनश्याम लाल देवड़ा, राजस्थान की प्रशासनिक व्यवस्था, पृ. 85
- देवड़ा, वही, पृ. 67
- श्यामलदास, वीर विनोद, भाग 2, पृ. 504, पाउलेट, पृ. 59–60
- टॉड, एनाल्स एण्ड एक्टिविटिज ऑफ राजस्थान, पृ. 1061–63
- ठा. बहादुर सिंह, बीदावतों की ख्यात, पृ. 227
- बीदावतों की ख्यात, वही, पृ. 227
- वही, पृ. 234–35
- वही, पृ. 236–37
- बीकानेर री ख्यात, पृ. 112
- ठा. बहादुर सिंह, बीदावतों की ख्यात, पृ. 240
- पाउलेट, पृ. 74–75

Copyright © 2017 Published by kaav publications. All rights reserved www.kaavpublications.org